AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

गुरु घासीदास और समानता का विचारः आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों की पूर्वपीठिका

ORIGINAL ARTICLE

Authors
विजय कुमार कुर्रे
शोध छात्र

डॉ. अम्बुज कुमार शुक्ला
सहायक प्राध्यापक
राजनीति विज्ञान विभाग
श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

शोध सार

यह शोध–पत्र गुरु घासीदास (1756–1850) के चिंतन में निहित राजनीतिक संदर्भ और समाज पर उसके प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। गुरु घासीदास ने ऐसे समय में जन्म लिया जब भारतीय समाज जातिगत भेदभाव, सामाजिक अन्याय, ऊँच–नीच और अंधविश्वास की जकड़न में था। उन्होंने 'सत्य ही मानव का आभूषण है' का संदेश देकर लोगों को नैतिकता पूर्ण जीवन शैली प्रदान किया। यह शोध यह प्रतिपादित करता है कि गुरु घासीदास का चिंतन केवल धार्मिक सुधार तक सीमित नहीं था, बल्कि उसमें सामाजिक और राजनीतिक चेतना का भी सशक्त आयाम समाहित था। शोध में ऐतिहासिक–विश्लेषणात्मक पद्धति अपनाई गई है, जिसमें प्राथमिक स्रोतों (भजन, वाणी, लोककथाएँ) तथा द्वितीयक स्रोतों (शोध ग्रंथ, इतिहास लेखन, सामाजिक अध्ययन) का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। निष्कर्षतः, गुरु घासीदास के विचार आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व से गहरे साम्य रखते हैं। संविधान में निहित सामाजिक न्याय, आरक्षण व्यवस्था और वंचित समुदायों के राजनीतिक सशक्तिकरण में उनके चिंतन की छाप स्पष्ट दिखाई देती है साथ ही, उनका पर्यावरण–संवेदनशील दृष्टिकोण आज के सतत विकास विमर्श में अत्यंत प्रासंगिक है। इस प्रकार, यह शोध दर्शाता है कि गुरु घासीदास का चिंतन भारतीय समाज को न केवल ऐतिहासिक संदर्भ में बल्कि समकालीन परिप्रेक्ष्य में भी दिशा प्रदान करता है।

मुख्य शब्द

गुरु घासीदास, सतनाम पंथ, समानता और सामाजिक न्याय, लोकतांत्रिक मूल्य, दलित–आदिवासी सशक्तिकरण.

प्रस्तावना

गुरु घासीदास (1756–1850) छत्तीसगढ़ के महान संत, समाज सुधारक और सत्य धर्म के प्रवर्तक थे। उन्होंने ऐसे समय में जन्म लिया जब समाज जातिगत भेदभाव, ऊँच–नीच की सामाजिक संरचना, अंधविश्वास और शोषण से गहराई तक जकड़ा हुआ था। उनकी शिक्षाएँ एक सामाजिक और नैतिक क्रांति का आधार बनीं। उन्होंने ''सत्य ही मानव का आभूषण है'' का संदेश देकर लोगों को नैतिकता पूर्ण जीवन शैली प्रदान किया। नैतिक आचरण और सदाचार को सर्वोपरि मानते हुए ''सतनाम'' का सिद्धांत दिया। गुरु घासीदास ने समानता को मानव जीवन का सबसे

बड़ा मूल्य मानते हुए जाति–पांति की कठोर सीमाओं को अस्वीकार किया। उनके अनुसार, किसी की श्रेष्ठता जन्म से नहीं बल्कि उसके कर्म और नैतिक आचरण से निर्धारित होती है।

उन्होंने सतनाम पंथ की स्थापना की, जिसके अनुयायी 'सतनामी' कहलाए। यह पंथ समाज में भाईचारे, श्रम की प्रतिष्ठा और समानता की भावना को आगे बढ़ाने वाला बना। गुरु घासीदास ने समाज में व्याप्त अंधविश्वास, तंत्र–मंत्र और पाखंड का विरोध किया और लोगों को सरल, नैतिक तथा संयमित जीवन जीने की प्रेरणा दी। उन्होंने मांसाहार, नशाखोरी और हिंसक प्रवृत्तियों से दूर रहने का उपदेश दिया तथा प्रकृति और पर्यावरण के संरक्षण को भी धर्म का अंग माना।

गुरु घासीदास के चिंतन में 7 संदेश का सिद्धांत है जिसमें सतनाम पर विश्वास, जीव हत्या का निषेध (अहिंसा), मांसाहार का निषेध, चोरी व जुआ से दूर रहना, नशा सेवन से परहेज, जाति–पाति से दूरी, और व्यभिचार न करने के हैं, जो सतनाम पंथ के आधारभूत नियम हैं और जो समता, सत्य व मानवता पर आधारित एक न्यायपूर्ण समाज की स्थापना पर बल देते हैं और 42 वाणियों का सिद्धांत है जिसमें सत ह मनखे के गहना आय, जन्म ले मनखे मनखे सब एक बरोबर होथे फेर कर्म के आधार म मनखे मनखे गुड़ अऊ गोबर होथे, सतनाम ल जानव समझव परखव तब मानव, बइला–भैंसा ल दोपहर म हल मत चलाव, सतनाम ल अपन आचरण म उतारव, अंधविश्वास रूढ़िवाद परंपरावाद ल झन मानव, दाई–ददा अउ गुरु के सम्मान करिहव, सतनाम ह घट–घट म समाय हे, सतनाम ले ही सृष्टि के रचना होए हावय, मेहनत के रोटी ह सुख के आधार आय, पानी पीहु जान के अउ गुरु बनावव छान के, मोर ह सब्बो संत के आय अउ तोर ह मोर बर कीरा ये, पहुना ल साहेब समान जानिहव, इही जनम ल सुधारना साँचा ये पुनर्जन्म के गोठ झूठ आय, गियान के पंथ किरपान के धार ये, दीन–दुखी के सेवा सबले बड़े धरम आय, मरे के बाद पीतर मनई मोला बईहाय कस लागथे, जतेक हव सब मोर संत आव, तरिया बनावव कुआं बनावव दरिया बनावव फेर मंदिर बनई मोर मन नई आवय, रिस अउ भरम ल त्यागथे तेकरे बनथे, दाई ह दाई आय मुरही गाय के दुध झन निकालहव, बारा महीना के खर्चा सकेल लुहु तबेच भले भक्ति करहु नई ते ऐखर कोनो जरूरत नई हे, ये धरती तोर ये येकर सिंगार करव, झगरा के जर नई होवय ओखी के खोखी होथे, नियाव ह सबो बर बरोबर होथे, मोर संत मन मोला काकरो ल बड़े कहिही त मोला सूजगा म हुदेसे कस लागही, भीख मांगना मरन समान ये न भीख मांगव न दव जांगर टोर के कमाए ल सिखव, सतनाम ह जीवन के आधार आय, खेती बर पानी अउ संत के बानी ल जतन के राखिहव, पशुबलि अंधविश्वास ये एला कभू झन करहु, जान के मरइ ह तो मारब आएच आय फेर कोनो ल सपना म मरइ ह घलो मारब आय, अवैया ल रोकन नई अऊ जवैया ल टोकन झन, चुगली अऊ निंदा ह घर ल बिगाड़थे, धन ल उड़ावव झन बने काम म लगावव, जीव ल मार के झन खाहु, गाय–भैंस ल नागर म झन जोतहु, मन के स्वागत ह असली स्वागत आय, जइसे खाहु अन्न वैसे बनही मन जइसे पीहू पानी वैसे बोलहु बानी, एक धुबा मारिच तुहु तोर बराबर आय, काकरो बर काँटा झन बोहु, बैरी संग घलो पिरीत रखहु, अपन आप ल हीनहा अउ कमजोर झन मानहु तहु मन काकरो ले कमती नई हावव, मंदिरवा म का करे जईबो अपन घट के ही देव ल मनईबो।

उनका प्रसिद्ध संदेश ''मनखे–मनखे एक बरोबर'' का संदेश देकर जन मानस में समता, समानता और बराबरी का भाव जागृत किया। नैतिक आचरण और सदाचार को सर्वोपरि मानते हुए ष्सतनामष् का सिद्धांत दिया। "जतन जतन जग बाखर" इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि सावधानी और संरक्षण से ही संसार सुरक्षित रह सकता है। इस प्रकार, गुरु घासीदास की शिक्षाएँ केवल धार्मिक उपदेश तक सीमित नहीं थीं, बल्कि उन्होंने सामाजिक सुधार, राजनीतिक चेतना और मानवीय गरिमा की रक्षा का मार्ग भी प्रशस्त किया।

लोकतांत्रिक मूल्यों की अवधारणा मानव सभ्यता के विकास के साथ–साथ धीरे–धीरे परिपक्व हुई है। समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व जैसे मूल्य प्राचीन काल से ही विभिन्न दार्शनिक परंपराओं में किसी न किसी रूप में विद्यमान रहे हैं। प्राचीन यूनान (ग्रीस) को लोकतंत्र का उद्गम स्थल माना जाता है, जहाँ नागरिकों की भागीदारी पर आधारित शासन व्यवस्था विकसित हुई, हालांकि यह सीमित थी और केवल विशेष वर्ग तक ही केंद्रित थी। मध्यकालीन यूरोप में सामंती व्यवस्था और धार्मिक प्रभुत्व ने इन मूल्यों को दबा दिया, लेकिन पुनर्जागरण और प्रबोधन युग ने मानव की व्यक्तिगत स्वतंत्रता, समान अधिकारों और तर्कसंगत सोच को पुनः स्थापित किया। 17वीं और 18वीं

शताब्दी में इंग्लैंड की मैग्ना कार्टा (1215), अमेरिका की स्वतंत्रता घोषणा (1776) और फ्रांस की क्रांति (1789) ने लोकतांत्रिक मूल्यों को संस्थागत रूप देने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विशेषकर फ्रांसीसी क्रांति का नारा स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व आधुनिक लोकतांत्रिक संरचनाओं का आधार बना।

भारतीय संदर्भ में भी इन मूल्यों की जड़ें गहरी हैं। प्राचीन उपनिषदों और बौद्ध दर्शन में सभी प्राणियों के प्रति समानता और करुणा का विचार मिलता है। मध्यकालीन संत परंपरा, जैसे गौतम बुद्ध, कबीर, रैदास और गुरु घासीदास ने सामाजिक समानता और जातिवाद के विरोध का स्वर बुलंद किया। आधुनिक युग में ज्योति राव फूले, महाराज सयाजी राव गायकवाड़, महात्मा गांधी, डॉ. भीमराव अंबेडकर और अन्य राष्ट्रीय नेताओं ने स्वतंत्रता आंदोलन को इन मूल्यों से जोड़ा और इन्हें भारतीय लोकतंत्र की नींव बनाया। स्वतंत्र भारत के संविधान में समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व को मूल अधिकारों और नीति–निर्देशक सिद्धांतों के रूप में स्थापित किया गया, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि हर नागरिक सामाजिक न्याय और मानवीय गरिमा के साथ जीवन जी सके। इस प्रकार, लोकतांत्रिक मूल्य ऐतिहासिक संघर्षों, दार्शनिक चिंतन और सामाजिक आंदोलनों के परिणामस्वरूप विकसित होकर आज सार्वभौमिक आदर्श के रूप में मान्य हैं।

गुरु घासीदास के चिंतन में राजनीतिक संदर्भ और समाज पर उसके प्रभाव का अध्ययन आज के समय में अत्यंत प्रासंगिक है। एक ओर जहाँ आधुनिक भारत लोकतांत्रिक मूल्यों समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व को अपने संवैधानिक ढांचे में स्थापित कर चुका है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक असमानता, जातिगत भेदभाव और आर्थिक विषमता अब भी विद्यमान हैं। ऐसे में गुरु घासीदास की शिक्षाएँ न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं बल्कि वर्तमान सामाजिक–राजनीतिक विमर्श को दिशा देने में भी सहायक हैं। उनका "सत्य धर्म" जातिवाद और ऊँच–नीच के भेदभाव के विरुद्ध खड़ा होकर एक वैकल्पिक सामाजिक संरचना प्रस्तुत करता है, जो समकालीन समाज में सामाजिक न्याय और समानता की स्थापना के लिए प्रेरणास्रोत है। इसके अतिरिक्त, उनके विचारों के विश्लेषण से यह समझा जा सकता है कि पूर्ववत लेखकों के अनुसार सतनामी को कभी ब्राह्मण होने का जो स्वयं सभी अनुष्ठान पंडिताई, विवाह नामकरण अन्य शुभ कार्य करते थे, तो कभी क्षत्रिय होने का प्रमाण जिनका युद्ध औरंगजेब जैसे तानाशाह राजा से हुआ, तो कभी वैश्य होने का जिनमें दिल्ली हरियाणा के साध सतनामी कपड़ों का बड़ा व्यपारी विदेशों तक व्यापार करने का प्रमाण देते हैं, वह सतनामी को कब दलित शोषित बनाकर समाज, ग्राम शहर के मोहल्लों, विद्यालय ,उत्सव,महोत्सव से पृथक कर बेटी रोटी खानपान मान सम्मान से वंचित कर दिया गया यह भी राजनीतिक षड्यंत्र है। दलित–आदिवासी समाज ने किस प्रकार राजनीतिक चेतना प्राप्त की और भारतीय लोकतंत्र में अपनी भागीदारी सुनिश्चित की। इस शोध की प्रासंगिकता इसलिए भी है क्योंकि यह परंपरागत धार्मिक सुधार आंदोलनों और आधुनिक सामाजिक आंदोलनों के बीच सेतु का कार्य करता है। साथ ही, यह अध्ययन समकालीन भारतीय राजनीति में हाशिए पर खड़े समुदायों की स्थिति और उनके सशक्तिकरण की प्रक्रिया को गहराई से समझने का अवसर प्रदान करता है।

पूर्व प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी जी के बहुत करीबी अविभाजित मध्य प्रदेश की प्रथम महिला सांसद मिनी माता संसद मीनाक्षी देवी से लेकर अब तक इन गुरु परिवारों की आन बान और शान देखते ही बनता है। सामाजिक संगठन की शक्ति से जिस राजनीतिक दलों को जब जब आशीर्वाद के साथ समर्थन दिया है उनकी सत्ता स्थापित हुआ है जिसमें गुरु घासीदास के छठवें पीढ़ी के गुरु खुशवंत साहब जी वर्तमान सरकारी में कैबिनेट मंत्री का कार्यभार संभाले हुए हैं।

संगठित जाति समूह की शक्ति को अपने सुपुत्रों को सौंपते हुए गुरु अमर दास की आध्यात्मिक ज्ञान को समझ में सात्विक बनाने साधुता बंधुत्व स्थापित करने तथा गुरु बालक दास को राजनीति में उतार कर अंग्रेजी शासन में राजा बनाने तक की प्रक्रिया उनकी राजनीतिक संदर्भ को समझ में प्रस्तुत करता है जिसमें राजनीतिक तौर पर सजग होकर सतनामी आज प्रत्येक सरकार और पार्टी में दो दो मंत्री बनाए जाते रहे हैं। द्वितीय पुत्र राजा गुरु बालक दास जी की राज व्यवस्था से वर्तमान में भी सतनामी समाज सुसंगठित है जो गुरु प्रधान समाज है। गुरु बालक दास जी को औपनिवेशिक भारत में राजा का पदवी देकर सतनामी साम्राज्य का उदय कराया।

शोध समस्या

वर्तमान समय में आरक्षण की वजह से ही भारतीय राजनीति में एससी एसटी वर्ग को सांसद विधायक या जन प्रतिनिधि बनने का मौका मिल रहा है उनमें राजनीतिक एकता की सोच का अभाव मिलता है जिसके कारण वह अनारक्षित सीटों से जीत पाने में सफलता प्राप्त नहीं की है। पहले जिस प्रकार 1952 से 56 में गुरु आगम दास उनकी गुरु माता मिनी माता सामान्य सीट से जीत के आई थी उसी प्रकार पुनः सतनामियों में स्वाभिमान को जागते हुए राजनीतिक एकता बनाने की सोच बढ़ानी होगी। भारतीय समाज का इतिहास जातिगत भेदभाव, सामाजिक असमानता और वंचित वर्गों के शोषण से गहराई से जुड़ा रहा है। ऐसे परिप्रेक्ष्य में गुरु घासीदास का चिंतन और उनकी शिक्षाएँ एक सामाजिक तथा राजनीतिक चेतना के रूप में उभरकर सामने आईं। उन्होंने सतनाम पंथ की स्थापना कर सत्य, समानता और अहिंसा को जीवन का आधार बताया तथा जातिवाद और अंधविश्वास जैसी कुप्रथाओं को चुनौती दी। यद्यपि उनके विचार 18वीं–19वीं शताब्दी में समाज सुधार के रूप में प्रकट हुए, लेकिन उनका प्रभाव केवल धार्मिक या आध्यात्मिक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहा, बल्कि सामाजिक संगठन, राजनीतिक चेतना और दलित–आदिवासी सशक्तिकरण तक विस्तारित हुआ। समस्या यह है कि उनके चिंतन को प्रायः केवल एक धार्मिक सुधार आंदोलन के रूप में देखा गया है, जबकि उसके राजनीतिक संदर्भ और सामाजिक प्रभावों को अपेक्षित महत्व नहीं दिया गया। आज भी जातिगत असमानता, सामाजिक अन्याय और वंचित तबकों का राजनीतिक हाशियाकरण भारतीय लोकतंत्र के लिए गंभीर चुनौती है। ऐसे में यह शोध आवश्यक है कि गुरु घासीदास के चिंतन का विश्लेषण केवल धार्मिक दृष्टि से नहीं, बल्कि सामाजिक–राजनीतिक संदर्भ में किया जाए, ताकि उनके विचारों की समकालीन प्रासंगिकता और भारतीय लोकतंत्र पर उनके योगदान को स्पष्ट किया जा सके।

उद्देश्य

- गुरु घासीदास के चिंतन में समानता की अवधारणा को परिभाषित करना।
- यह देखना कि समानता का विचार आज के लोकतांत्रिक भारत में कैसे प्रतिबिंबित होता है।
- सामाजिक न्याय की नीतियों पर उनके चिंतन का परोक्ष प्रभाव खोजना।

परिकल्पना

$\mathbf{H_1}$ गुरु घासीदास का समानता का विचार भारत में लोकतांत्रिक मूल्यों की ऐतिहासिक जड़ें मजबूत करता है।

शोध पद्धति

इस शोध में गुणात्मक पद्धति का प्रयोग किया जाएगा, ताकि गुरु घासीदास के चिंतन, उनकी शिक्षाओं और उनके सामाजिक–राजनीतिक प्रभाव का गहन विश्लेषण किया जा सके। सबसे पहले ऐतिहासिक–विश्लेषणात्मक पद्धति का उपयोग करते हुए उस सामाजिक और राजनीतिक संदर्भ का अध्ययन किया जाएगा जिसमें गुरु घासीदास का उदय हुआ। इसके अंतर्गत 18वीं–19वीं शताब्दी के छत्तीसगढ़ और भारत की सामाजिक संरचना, जातिगत व्यवस्था तथा औपनिवेशिक प्रभावों का विश्लेषण किया जाएगा। दूसरे चरण में प्राथमिक स्रोतों जैसे सतनाम पंथ की वाणी, भजन, परंपरागत लोककथाएँ और मौखिक इतिहास को संकलित कर उनका अध्ययन किया जाएगा। इससे गुरु घासीदास के मूल संदेश और उनके अनुयायियों की सामाजिक चेतना को प्रत्यक्ष रूप से समझने में सहायता मिलेगी। इसके साथ ही द्वितीयक स्रोतों जैसे प्रकाशित शोधग्रंथ, लेख, ऐतिहासिक दस्तावेज और समकालीन विद्वानों की व्याख्याओं का तुलनात्मक अध्ययन भी किया जाएगा।

विश्लेषण

गुरु घासीदास और समानता का सामाजिक संदर्भ

गुरु घासीदास का जीवन और चिंतन उस सामाजिक संदर्भ में प्रकट हुआ जब भारतीय समाज जातिगत असमानता और ऊँच–नीच की कठोर व्यवस्था से ग्रस्त था। 18वीं–19वीं शताब्दी का छत्तीसगढ़ सामंती शोषण, ब्राह्मणवादी वर्चस्व और अस्पृश्यता की गहरी जड़ों से प्रभावित था। समाज में दलित और आदिवासी समुदाय न केवल

आर्थिक दृष्टि से वंचित थे, बल्कि उन्हें सामाजिक और धार्मिक अधिकारों से भी वंचित रखा गया था। ऐसे दौर में गुरु घासीदास ने ''सत्य ही मानव का आभूषण है'' का संदेश देकर लोगों को नैतिकता पूर्ण जीवन शैली प्रदान किया। उन्होंने जाति–पांति की विभाजनकारी व्यवस्था को अस्वीकार किया और यह प्रतिपादित किया कि मनुष्य की श्रेष्ठता उसके जन्म से नहीं बल्कि उसके कर्म और नैतिक आचरण से तय होती है। गुरु घासीदास द्वारा स्थापित सतनाम पंथ समानता का ही व्यावहारिक रूप था, जहाँ सभी अनुयायी 'सतनामी' कहलाते और जातिगत पहचान से परे एक साझा पहचान अपनाते थे। इस पंथ ने वंचित समुदायों को सामाजिक गरिमा और आत्मसम्मान प्रदान किया साथ ही, श्रम की प्रतिष्ठा और भाईचारे पर बल देकर उन्होंने यह स्पष्ट किया कि हर व्यक्ति समाज का समान और महत्वपूर्ण हिस्सा है। उनके विचारों ने दलित–आदिवासी समाज को एकजुट किया और सामाजिक न्याय के लिए संघर्ष की नींव रखी।

प्राचीन समय में शूद्रों पर अनेकों जुल्म ढाए पर भी वह हिंदू धर्म के प्रति सजगता और समर्थन देते रहे जिससे कि उनका भारत के प्रति देश प्रेम दिखता है उस समय में अंग्रेजी शासन तुर्की, फारसी का खूब बोलबाला था जिसमें धर्म परिवर्तन कर लाखों लोग अन्य धर्म ग्रहण कर सकते थे लेकिन गुरु ने सतनाम का रास्ता अपनाकर मनुस्मृति की रूढ़ियों को नकारते हुए सनातनी व्यवस्था को आगे बढ़ाने में अहम भूमिका निभाई, यह भी गुरु घासीदास के चिंतन की विशेषता है।

लोकतंत्र में समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व से उनका साम्य

गुरु घासीदास के चिंतन में निहित मूल्य आधुनिक लोकतांत्रिक आदर्शों समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व से गहरे रूप में जुड़े हुए हैं। उन्होंने ऐसे समय में समाज को दिशा दी जब जातिगत असमानता, ऊँच–नीच की कठोर व्यवस्था और सामाजिक शोषण अपने चरम पर थे। गुरु घासीदास ने ''सत्य ही मानव का आभूषण है'' का सिद्धांत देकर यह प्रतिपादित किया कि सभी मनुष्य सत्य और नैतिकता के आधार पर समान हैं। यह विचार लोकतंत्र के उस मूल मूल्य से साम्य रखता है जो सभी नागरिकों को बिना किसी जातिगत, धार्मिक या आर्थिक भेदभाव के समान अधिकार प्रदान करता है। स्वतंत्रता की दृष्टि से गुरु घासीदास ने व्यक्ति को अंधविश्वास, तंत्र–मंत्र और धार्मिक पाखंड की बेड़ियों से मुक्त करने का आह्वान किया। उन्होंने यह शिक्षा दी कि मनुष्य को सत्य, श्रम और नैतिक आचरण के आधार पर स्वतंत्र रूप से जीवन जीने का अधिकार है। यह विचार आधुनिक लोकतांत्रिक स्वतंत्रता की अवधारणा के साथ मेल खाता है, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को विचार, अभिव्यक्ति और जीवन जीने की स्वतंत्रता प्राप्त है। बंधुत्व का सिद्धांत भी उनके चिंतन में स्पष्ट दिखाई देता है। सतनाम पंथ की स्थापना के माध्यम से उन्होंने सामाजिक बंधुत्व और भाईचारे को महत्व दिया। जातिगत पहचान को अस्वीकार कर सभी को 'सतनामी' नाम देना इस बात का प्रमाण है कि वे समाज में एक साझा मानवीय पहचान स्थापित करना चाहते थे। यह दृष्टि लोकतांत्रिक समाज में परस्पर सम्मान, सहयोग और एकता के सिद्धांत से गहराई से संबंधित है।

आधुनिक भारत में सामाजिक–राजनीतिक नीतियों में परिलक्षित प्रभाव

गुरु घासीदास का चिंतन और उनकी शिक्षाएँ केवल 18वीं–19वीं शताब्दी के समाज तक सीमित नहीं रहीं, बल्कि उनका प्रभाव आधुनिक भारत की सामाजिक–राजनीतिक नीतियों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। उन्होंने समानता, सत्य और अहिंसा को जीवन का आधार बनाकर जातिगत भेदभाव और ऊँच–नीच की व्यवस्था को चुनौती दी। यही विचार आगे चलकर भारतीय लोकतंत्र और संविधान की नींव बने। संविधान में निहित समानता का अधिकार (अनुच्छेद 14 से 18), अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता (अनुच्छेद 19) और सामाजिक न्याय व बंधुत्व की भावना सीधे तौर पर गुरु घासीदास जैसे संत–चिंतकों की वैचारिक धारा को ही पुष्ट करते हैं। आधुनिक भारत की सामाजिक नीतियों में आरक्षण व्यवस्था, दलित–आदिवासी कल्याण योजनाएँ और सामाजिक न्याय संबंधी कार्यक्रम उस चेतना के प्रत्यक्ष उदाहरण हैं, जो वंचित समाज को बराबरी का स्थान दिलाने की दिशा में कार्यरत हैं। गुरु घासीदास के सतनाम पंथ ने जो सामाजिक संगठन और आत्मसम्मान की भावना जगाई, वही आज राजनीतिक सशक्तिकरण का आधार बनी। दलित–आदिवासी समाज की राजनीति में भागीदारी और उनकी बढ़ती प्रतिनिधित्व क्षमता, उनके चिंतन की सामाजिक–राजनीतिक प्रासंगिकता का परिणाम है।

परिकल्पना की जाँच के लिए ऐतिहासिक–विश्लेषणात्मक और तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। स्वतंत्र चर के रूप में गुरु घासीदास का समानता का विचार लिया गया है, जिसमें जाति–पांति का विरोध, कर्म पर आधारित श्रेष्ठता और सतनाम पंथ की स्थापना जैसे पहलू शामिल हैं। परतंत्र चर भारतीय लोकतांत्रिक मूल्यों की ऐतिहासिक जड़ें हैं, जिनमें समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व प्रमुख हैं। सतनाम पंथ की वाणी, भजन और लोकपरंपराओं से प्राप्त प्रमाण यह स्पष्ट करते हैं कि गुरु घासीदास ने सामाजिक समानता को केंद्रीय मूल्य के रूप में प्रस्तुत किया। जब इन विचारों की तुलना भारतीय संविधान और लोकतांत्रिक आदर्शों से की जाती है, तो गहरा साम्य दिखाई देता है। जातिगत भेदभाव का विरोध अनुच्छेद 14–18 की समानता संबंधी प्रावधानों से मेल खाता है, जबकि भाईचारे और श्रम की प्रतिष्ठा बंधुत्व की नींव को मजबूत करते हैं। इस प्रकार, परिकल्पना पुष्ट होती है कि उनका चिंतन लोकतांत्रिक मूल्यों की ऐतिहासिक जड़ों को दृढ़ करता है।

निष्कर्ष

गुरु घासीदास का चिंतन भारतीय समाज और राजनीति के लिए एक गहरी प्रेरणा का स्रोत रहा है। उन्होंने जिस काल में जन्म लिया, उस समय जातिगत भेदभाव, ऊँच–नीच, अंधविश्वास और सामाजिक अन्याय अपने चरम पर थे। ऐसे कठिन दौर में उन्होंने ''सत्य ही मानव का आभूषण है'' का संदेश देकर लोगों को नैतिकता पूर्ण जीवन शैली प्रदान किया। उनके द्वारा स्थापित सतनाम पंथ ने वंचित और शोषित वर्गों को आत्मसम्मान, सामाजिक पहचान और संगठन की शक्ति प्रदान की। यह न केवल धार्मिक सुधार आंदोलन था, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक चेतना का भी उदय था, जिसने आगे चलकर भारतीय लोकतंत्र के मूल्यों की नींव को मजबूत किया। उनका चिंतन आधुनिक लोकतांत्रिक आदर्शों समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व से गहरे साम्य रखता है। संविधान में निहित सामाजिक न्याय, आरक्षण नीति, दलित–आदिवासी कल्याण योजनाएँ और सामाजिक समानता पर आधारित नीतियाँ उनके विचारों के प्रभाव की स्पष्ट झलक देती हैं इसके साथ ही उनकी पर्यावरण–संवेदनशील दृष्टि आज के सतत विकास और संरक्षण की नीतियों में प्रासंगिक हो उठती है। गुरु घासीदास का समानता आधारित चिंतन केवल धार्मिक सुधार तक सीमित नहीं था, बल्कि उसने भारतीय लोकतंत्र की नींव को गहराई से प्रभावित किया। उनके विचारों में निहित समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व आज संविधान और सामाजिक–राजनीतिक नीतियों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं, जो उनकी स्थायी प्रासंगिकता सिद्ध करते हैं। समग्रतः, गुरु घासीदास ने न केवल अपने समय में समाज को जातिवाद और पाखंड से मुक्त करने का प्रयास किया, बल्कि उनके विचार आज भी सामाजिक न्याय, लोकतंत्र और मानवता के लिए प्रेरणा बने हुए हैं। उनका चिंतन भारतीय समाज के वंचित तबकों को राजनीतिक भागीदारी और सामाजिक सम्मान दिलाने की दिशा में एक स्थायी योगदान है।

संदर्भ सूची

1. Ambedkar, B. R. (2014) *Annihilation of caste*, Verso Books, New York, US.
2. Chatterjee, P. (1993) *The nation and its fragments: Colonial and postcolonial histories*, Princeton University Press, New Jersey, USA.
3. Jangde, R. (2016) Guru Ghasidas and the Satnami movement: A socio-political perspective, *Journal of Chhattisgarh Studies,* 4(2), 45–58.
4. Kumar, A. (2012) *Dalit movements in India: Local practices, global connections*, Oxford University Press, Walton Street, Oxford, UK.
5. Mukherjee, S. (2002) *A dictionary of Indian history*, Macmillan, Macmillan, New York, US.
6. Pradhan, S. (2015) Guru Ghasidas and his philosophy of Satnam: Relevance in contemporary society, *Indian Historical Review,* 42(1), 67–84.
7. Sharma, R. K. (2010) Social reform movements in 18th and 19th century India, *Indian Journal of Social Research,* 51(3), 233–249.
8. Singh, K. S. (1992) *The scheduled castes*, Anthropological Survey of India, New Delhi.
9. Thakur, R. (2018) Socio-political relevance of Guru Ghasidas in modern Indian democracy, *Economic and Political Weekly,* 53(21), 55–62.

––==00==––